



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (1)  
PART II—Section 3—Sub-section (1)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 442]

नई दिल्ली, बुधवार, अक्टूबर 10, 1990/आश्विन 18, 1912

No. 442]

NEW DELHI, WEDNESDAY, OCTOBER 10, 1990/ASVINA 18, 1912

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रचा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a  
separate compilation

गृह मंत्रालय

प्रधिसूचना

नई दिल्ली, 10 अक्टूबर, 1990

सा.का.नि. 83 (अ) :—राष्ट्रपति द्वारा जारी की गई निम्न-  
लिखित उद्घोषणा सर्वसाधारण के सूचनार्थ प्रकाशित की जा रही है :—

यतः मुझे, भारत के राष्ट्रपति, आर. वेंकटरामन को कर्नाटक राज्य के राज्यपाल से एक रिपोर्ट प्राप्त हुई है, और इस रिपोर्ट तथा मुझे प्राप्त ग्रन्थ सूचना पर विचार करने के बाद मेरा समाधान हो गया है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है, जिसमें उस राज्य का शासन भारत के संविधान (जिसे इसमें इसके पश्चात् "संविधान" कहा गया है) के उन उपबंधों के अनुसार नहीं चलाया जा सकता है :

अतः अब मैं, संविधान के अनुच्छेद 356 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का तथा उस निमित्त मुझे समर्थ बनाने वाली अन्य सभी शक्तियों का प्रयोग करते हुए एतद्द्वारा उद्घोषणा करता हूँ कि मैं—

(क) उक्त राज्य की सरकार के सभी हस्त और उस राज्यके राज्यपाल में निहित, या उनके द्वारा प्रयोक्तव्य सभी शक्तियाँ, भारत के राष्ट्रपति के रूप में स्वयं संचालता हूँ ;

(ख) घोषित करता हूँ कि उक्त राज्य के विधान मंडल की शक्तियाँ संसद द्वारा या उसके प्राधिकार के अधीन प्रयोक्तव्य होंगी ; और

(ग) निम्नलिखित आनुवंशिक और पारिवारिक उपबंध करता हूँ जो इस उद्घोषणा के उद्देश्यों को प्रभावी बनाने के लिए मुझे प्रावश्यक या वांछनीय प्रतीत होते हैं ; अधत्ति :—

(1) इस उद्घोषणा के उपर्युक्त खण्ड (क) के आधार पर मेरे द्वारा संभाले गए कृत्यों और शक्तियों का प्रयोग करने में, मेरे लिये भारत के राष्ट्रपति के रूप में उस सीमा तक जिस तक मैं ठीक समझूँ उक्त राज्य के राज्यपाल के माध्यम से कार्य करना विधिपूर्ण होगा ;

(2) उक्त राज्य के संबंध में संविधान के निम्नलिखित उपबंधों के प्रवर्तन को एतद्द्वारा निलंबित किया जाता है, अधत्ति :—

अनुच्छेद (3) के परन्तुक का उत्तरा भाग जितने का संबंध राष्ट्र-पति द्वारा राज्य के विधान मंडल को निर्देश करने से है ;

अनुच्छेद 151 के खंड (2) का उतना भाग जितने का संबंध भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक द्वारा राज्यपाल के समक्ष प्रस्तुत किए गए प्रतिवेदनों को राज्य के विधान मंडल के समक्ष रखे जाने से है;

अनुच्छेद 163 और 164;

अनुच्छेद 168 के खंड (3) का उतना भाग जितने का संबंध राज्य सरकार के कार्य के मंत्रियों के बीच बंटवारे से है;

अनुच्छेद 167;

अनुच्छेद 169 के खंड (1) का उतना भाग जितने का सम्बन्ध राज्य की विधान सभा द्वारा संकल्प पारित किए जाने से है;

अनुच्छेद 174 का खंड (1) और खंड (2) का उपखंड (क);

अनुच्छेद 175, 176 और 177;

अनुच्छेद 179 का खंड (ग) और उसका प्रथम परन्तुक;  
अनुच्छेद 181, अनुच्छेद 183 का खंड (ग) और उसके परन्तुक;

अनुच्छेद 185, 188, 189, 193 और 194;

अनुच्छेद 196 से 198 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं);

अनुच्छेद 199 के खंड (3) और (4);

अनुच्छेद 200 और 201;

अनुच्छेद 202 से 211 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं);

अनुच्छेद 213 के खंड (1) के परन्तुक और खंड (3) के परन्तुक; और

अनुच्छेद 323 के खंड (2) का उतना भाग जितने का संबंध आपन सहित रिपोर्ट के राज्य के विधान मंडल के समक्ष रखे जाने से है;

(3) संविधान में राज्यपाल के प्रति किसी निदेश का अर्थ उस राज्य के सम्बन्ध में राष्ट्रपति के प्रति निदेश समाना जायेगा और उसमें राज्य के विधान मंडल या विधान सभा के प्रति किसी निदेश का, जहां तक उसका संबंध उनके कृत्यों और उसकी शक्तियों से है, अर्थ, जब तक कि संघर्ष द्वारा अन्यथा अपेक्षित न हो, संसद के प्रति निदेश लगाया जाएगा और बिशिष्टतया अनुच्छेद 213 में राज्यपाल और राज्य के विधान मंडल या उसके सदस्यों के प्रति निदेश का अर्थ क्रमशः राष्ट्रपति और संसद या उसके सदस्यों के प्रति निदेश लगाया जाएगा;

परन्तु इसमें की कोई बात अनुच्छेद 154, अनुच्छेद 155 से लेकर अनुच्छेद 159 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं), अनुच्छेद 299 और अनुच्छेद 361 तथा द्वितीय अनुसूची के पैरा 1 से लेकर पैरा 4 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं) के उपबन्धों पर प्रभाव नहीं डालेगी और न राष्ट्रपति को उस खंड के उपखंड (1) के अधीन उस सीमा तक जहां तक वह ठीक समझे उक्त राज्य के राज्यपाल के माध्यम से कार्य करने से निर्वाचित करेगी;

(4) संविधान में राज्य के विधान मंडल के या उसके द्वारा बनाए गए अधिनियमों या विधियों के प्रति किसी निदेश का ऐसा अर्थ लगाया जायेगा मानों वह उन अधिनियमों और विधियों को भी समाविष्ट करता है जो इस उद्घोषणा के आधार पर संसद द्वारा या राष्ट्रपति या संविधान के अनुच्छेद 357 के खंड (1) के उपखंड (क) में निर्दिष्ट अन्य प्राधिकारी द्वारा राज्य के विधान मंडल की शक्तियों का प्रयोग करते

हुए, बनाए गए हैं; और कर्नाटक सामान्य खंड अधिनियम, 1899 (1899 का कर्नाटक अधिनियम संख्या iii) और सामान्य खंड अधिनियम, 1897 (1897 का 10) का उतना भाग जितना राज्य की विधियों पर लागू है ऐसे किसी अधिनियम या विधि के बारे में इस प्रकार प्रभावी होगा मानों यह उस राज्य के विधानमंडल का अधिनियम हो।

नई दिल्ली,

10 अक्टूबर, 1990

(आर. वेंकटरामन)

राष्ट्रपति

[स. का. 5/11013/8/90-सी.एस.आर.]

नरेश चन्द्र, गृह सचिव

## MINISTRY OF HOME AFFAIRS

### NOTIFICATION

New Delhi, the 10th October, 1990

G.S.R. 833(E).—The following Proclamation by the President is published for general information :

Whereas, I, R. Venkataraman, President of India, have received a report from the Governor of the State of Karnataka and after considering the report and other information received by me, I am satisfied that a situation has arisen in which the Government of that state cannot be carried on in accordance with the provisions of the Constitution of India (hereinafter referred to as "the Constitution");

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by article 356 of the Constitution and of all other powers enabling me in that behalf, I hereby proclaim that I,—

- (a) assume to myself as President of India all functions of the Government of the said State and all powers vested in, or exercisable by the Governor of that State ;
- (b) declare that the powers of the Legislature of the said State shall be exercisable by or under the authority of Parliament ; and
- (c) make the following incidental and consequential provisions which appear to me to be necessary or desirable for giving effect to the objects of this proclamation, namely :—
  - (i) in the exercise of the functions and powers assumed to myself by virtue of clause (a) of this Proclamation as aforesaid, it shall be lawful for me as President of India to act to such extent as I think fit through the Governor of the said State ;
  - (ii) the operation of the following provisions of the Constitution in relation to that State is hereby suspended, namely :—

so much of the proviso to article 3 as relates to the reference by the President to the Legislature of the State ;

so much of clause (2) of article 151 as relates to the laying before the Legislature of the State of the Reports submitted to the Governor by the Comptroller and Auditor-General of India ;

articles 163 and 164 ;

so much of clause (3) of article 166 as relates to the allocation among the Ministers of the business of the Government of the State ;

article 167 ;

so much of clause (1) of article 169 as relates to the passing of a resolution by the Legislative Assembly of the State ;

clause (1) and sub-clause (a) of clause (2) of article 174 ;

articles 175, 176 and 177 ;

clause (c) of article 179 and the first proviso thereto ;

article 181, clause (c) of article 183 and the proviso thereto ;

articles 185, 188, 189, 193 and 194 ;

articles 196 to 198 (both inclusive), clauses (3) and (4) of article 199 ;

articles 200 and 201 ;

articles 208 to 211 (both inclusive) ; the proviso to clause (1) and the proviso to clause (3) of article 213 ; and

so much of clause (2) of article 383 as relates to the laying of the report with a memorandum before the Legislature of the State ;

- (iii) any reference in the Constitution to the Governor shall in relation to the said State be construed as a reference to the President and any reference therein to the Legislature of the State or the Houses thereof shall, in so far as it relates to the functions and powers thereof, be construed, unless the context otherwise requires, as a reference to Parliament and, in particular, the reference in article 213 to the Governor and to the Legislature of the State or the Houses thereof, shall be construed as references to the President and to Parliament or to the Houses thereof respectively ;

Provided that nothing herein shall affect the proviso of article 153, articles 155 to 159 (both inclusive) article 299 and article 361 and paragraphs 1 to 4 (both inclusive) of the Second Schedule or prevent the President from acting under sub-clause (i) of this clause to such extent as he thinks fit through the Governor of the said State ;

- (iv) any reference in the Constitution to Acts or laws of or made by the Legislature of the State shall be construed as including a reference to Acts or laws made in exercise of the powers of the Legislature of the State, by Parliament by virtue of this Proclamation, or by the President or other authority referred to in sub-clause (a) of clause (1) of article 357 of the Constitution and the Karnataka General Clauses Act, 1899 (Karnataka Act No. III of 1899) and so much of the General Clauses Act, 1897 (10 of 1897) as applies to State laws, shall have effect in relation to any such Act or law as if it were an Act of the Legislature of the State.

New Delhi,

The 10th October, 1990.

(R. VENKATARAMAN)  
PRESIDENT

[No. V/11013/8/90-CSR]  
NARESH CHANDRA, Home Secy.

सा.क.नि. 834(ख) :- राष्ट्रपति द्वारा जारी किया गया निम्नलिखित आदेश सर्वसाधारण के सूचनार्थ प्रकाशित किया जा रहा है :-

आदेश

भारत के संविधान के अनुच्छेद 356 के अधीन गये द्वारा, अ.ज. अक्टूबर, 1990 के 10वें दिन जारी की गई उद्घोषणा के खंड (ग) के उपखंड (i) का अनुसरण करते हुए, मैं एतद्वारा निदेश देता हूँ कि कर्नाटक राज्य सरकार के सभी कृत्य और संविधान के अधीन या उस राज्य में प्रयुक्त किसी विधि के अधीन उस राज्य के राज्यपाल में लिहित या उसके द्वारा प्रेषित सभी शक्तियाँ, जिनको राष्ट्रपति ने उक्त उद्घोषणा के खंड (क) के आधार पर स्वयं संभाल लिया है, राष्ट्रपति के अधीक्षण, निदेशन और नियंत्रण के अध्याधीन रहते हुए, उक्त राज्य के राज्यपाल द्वारा भी प्रयोक्तव्य होंगी।

रा. वेंकटरामन,  
राष्ट्रपति

नई दिल्ली,

10 अक्टूबर, 1990

[सं. V/11013/8/90-सी.एस.आर.]

नरेम चन्द्रा, गृह सचिव

G.S.R. 834(E).—The following Order by the President is published for general information :—

**ORDER**

In pursuance of sub-clause (i) of clause (c) of the Proclamation issued on this the 10th day of October, 1990 by me under article 356 of the Constitution of India, I hereby direct that all the functions of the Government of the State of Karnataka and all the powers vested in or exercisable by the Governor of that State under the Constitution or under any law in force in that State, which have been assumed by

the President by virtue of clause (a) of the said Proclamation, shall, subject to the superintendence, direction and control of the President, be exercisable also by the Governor of the said State.

New Delhi,

The 10th October, 1990.

(R. VENKATARAMAN)  
PRESIDENT

[No. V/11013/8/90-CSR]  
NARESH CHANDRA, Home Secy.